सम्पादकीय

सब ठीक है का संदेश!

श्रम बाजार की बात होती है, तो उसमें ऐसे कार्यों का कोई महत्त्व नहीं होता, जिनसे लोगों को एक निश्चित आमदनी नहीं होती हो। ऐसे कितने लोग होंगे, जो स्वेच्छा से ऐसी स्वंयसेवा कर रहे होंगे? आठ साल पहले कामकाजी उम्र की महिलाओं का 21 फीसदी श्रम बाजार में था। अब ये संख्या 9 प्रतिशत रह गई है। गनीमत है कि रोजगार बाजार के बारे में ताजा आंकड़ों की सच्चाई को सरकार ने चुनौती नहीं दी है। लेकिन उसने उन आंकड़ों की अलग व्याख्या जरूर पेश कर दी है। आंकड़ें यह हैं कि भारत की कुल कामकाजी आबादी का 60 फीसदी से अधिक हिस्सा श्रम से बाहर हो गया है। यानी ये वो लोग हैं, जो रोजगार नहीं ढूंढ रहे हैं। स्पष्टत: इनमें बहुत बड़ा हिस्सा उन लोगों का है, जिन्हें अपनी योग्यता या जरूरत के मुताबिक काम मिलने की उम्मीद नहीं रही। तो हताश होकर उन्होंने अपने को इस बाजार से बाहर कर लिया। जब नरेंद्र मोदी सरकार सत्ता में आई थी, तब कामकाजी आबादी (18 से 60 वर्ष) का 46 फीसदी हिस्सा श्रम बाजर में शामिल था। अब यह संख्या लगभग 39.5 प्रतिशत है। ये आंकड़े सेंटर फॉर मोनिटरिंग ऑफ इंडियन इकॉनमी (सीएमआई) ने जारी किए हैं। चूंकि सरकार ने सावधिक रोजगार-बेरोजगारी का सर्वे बंद कर रखा है, इसलिए इस बारे में जानने का एकमात्र स्रोत सीएमआईई के सर्वे रह गए हैं। इस संस्था के ताजा आंकड़ों पर चर्चा तेज हुई तो केंद्रीय श्रम मंत्रालय ने उस पर अपना जवाब जारी किया। उसमें कहा गया- 'यह गौर करना महत्त्वपूर्ण है कि कामकाजी उम्र वले सभी संभव है कि काम ना कर रहे हों या काम की तलाश में ना हों। लेकिन इन समूह का एक बड़ा हिस्सा शिक्षा ग्रहण कर रहा है या हो सकता है कि वह ऐसा काम कर रहा हो, जिनमें वेतन का भुगतान नहीं होता। हो सकता है कि एक बड़ा हिस्सा घरेलू कामकाज में शामिल हो, जिसमें भी वेतन नहीं मिलता।' इनमें शिक्षा की बात तो ठीक है। लेकिन जब श्रम बाजार की बात होती है, तो उसमें ऐसे कार्यों का कोई महत्त्व नहीं होता, जिनसे लोगों को एक निश्चित आमदनी नहीं होती हो। आखिर ऐसे कितने लोग होंगे, जो स्वेच्छा से ऐसी स्वंयसेवा कर रहे होंगे? सीएमआईई ने बताया है कि आठ साल पहले कामकाजी उम्र की महिलाओं का 21 फीसदी श्रम बाजार में था। अब ये संख्या 9 प्रतिशत रह गई है। जाहिर है, इनमें से ज्यादातर महिलाएं घरेलू कार्यों में लगी होंगी। लेकिन क्या ये स्वस्थ स्थिति है और ऐसा उन्होंने स्वेच्छा से किया है? या ऐसा श्रम बाजार की स्थितियां बिगडने की वजह से हुआ है? कामकाजी आबादी के इतने बड़े हिस्से के उत्पादक काम ना करने से अर्थव्यवस्था को जो नुकसान होता है,. क्या सरकार ने उसका आकलन किया है?

श्मशान घाट की भूमि पर भू माफियाओं का कब्जा

बिजनौर जिले की तहसील नगीना के ग्राम महेशपुर उर्फ हीरावाली मैं श्मशान घाट की भूमि पर भू माफियाओं का कब्जा कई वर्षों से भू-माफिया श्मशान घाट की लाखों रुपए की कीमत की भूमि पर अपना कब्जा जमाए बैठे हैं। जबकि श्मशान घाट तीन या चार गांव का श्मशान घाट है। गांव में किसी व्यक्ति की मृत्यु होने के बाद दाह संस्कार किया जाता है। लेकिन भू माफिया के कब्जे को लेकर जहां उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और जिला बिजनौर के जिला अधिकारी उमेश मिश्रा ने सामाजिक भूमि या चारागाह की जमीन को कब्जा मुक्त कराने का हर संभव प्रयास कर रहे हैं। लेकिन तहसील नगीना के ग्राम महेशपुर उर्फ हीरावाली मैं श्मशान घाट सहित कई तालाबों पर भू माफिया ने कब्जा कर रखा है। और आपको बताते चलें कि कई सामाजिक भूमि पर लोगों ने अपना निर्माण कर मकान बना रहे हैंलेकिन इस ओर कोई राजस्व विभाग का कोई अधिकारी देखने को तैयार नहीं है। इन भू माफिया की वजह से सरकार की छवि खराब हो रही है लेकिन राजस्व विभाग का कोई कठिन कदम न उठाने से इन भू माफिया के हौसले बुलंद हैं। इससे पहले भी कई बार श्मशान घाट की भूमि को लेकर आवाज उठी लेकिन किसी भी राजस्व विभाग के अधिकारी ने श्मशान घाट की भूमि को कब्जा मुक्त नहीं कराया कहने को तो श्मशान घाट की भूमि लगभग 14 बीघा है। लेकिन अगर श्मशान घाट की भूमि की पैमाइश की जाए तो भू माफिया की सारी की सारी पोल खुलती नजर आएगी। कुछ भू माफियाओं ने तो श्मशान घाट की भूमि पर बोरिंग करा कर और श्मशान घाट की भूमि को कब्जा कर खेती कर रखी है। लेकिन राजस्व विभाग इस ओर कोई ध्यान देने को तैयार नहीं है।

गेहू के भूसे की महंगाई का दंश झेल रहे हैं पशुपालक

बिजनौर जिले में भूसे की महंगाई को लेकर पशुपालक की चिंता बड़ी हुई है।जहां गेहूं के सीजन में गेहूं का भूसा चार सौ या पांच सौ प्रति कुंतल बिकता था वही आज भूसे की कीमत लगभग ग्यारह सौ रुपए प्रति कुंटल है। जिससे पशुपालकों में चिंता बनी हुई है। भूसा इतना महंगा होने के कारण पशुपालक अपने पशुओं को भूसा कहां से खिलाएंगे कुछ लोग तो भूसे को स्टॉक कर के भूसे की कीमत को बढ़ावा दे रहे हैं। क्योंकि पिछली बार बरसात में भूसा लगभग 15

देखते हुए लोगों ने भूसा स्टॉक कर लिया है। क्योंकि भूसा स्टॉक स्वामी सोच रहे हैं कि जब पिछली बार 15 सो रुपए भूसा बिका था तो इस बार लगभग घ2000 भूसा बिकेगा इसी को देखते हुए लोगों ने भूसा का स्टॉक कर रखा है। या मानो यह लोग महंगाई को बढ़ावा दे रहे हैं। जिससे पशुपालकों में चिंता बनी हुई है। जिलाधिकारी द्वारा भूसा स्टॉक स्वामियों पर जांच कर उचित कार्रवाई होनी चाहिए जिससे भूसा स्टॉक स्वामी की मनमानी न हो और पशुपालक अपने पशुओं को भूसा खिला सके।

बस्तर में खेलों का विकास

शशांक श्रीधर शेंडे

बस्तर संभाग के मुख्यालय जगदलपुर में नौकरी के लिए 1988 नवम्बर को जब मैं निकला तो माँ बोली वहां मत जा, आ. दिवासी लोग तीर मार देते हैं । देशभर के आम जनमानस में बस्तर की अमूमन यही तस्वीर थी । क्षेत्रफल में केरल से बड़ा होने के बावजूद और खनिज भंडारों के अकूत संपदा का मालिक होने के बाद भी बस्तर अत्यन्त पिछड़ों में गिना जाता था । जब तक बस्तर मध्यप्रदेश का हिस्सा था यहाँ विकास की चिडिया को पंख भी नहीं लगे थे । सामान्य विकास का नामोनिशान नही था तो खेलों का विकास तो जैसे कल्पना के आकाश में उडने जैसा ही था ।

वर्ष 2000 का नवम्बर महीना बस्तर के लिए सौगात लेकर आया जब अटल बिहारी जी की सरकार ने छतीसगढ़ राज्य बनाया मध्यप्रदेश से अलग करके । तब शनै: शनै: विकास की नदिया का पानी बस्तर की ओर भी बहने लगा कहूँ ,तो अतिशयोक्ति न होगी। वर्ष 1975 से आरम्भ हुई ठाकुर विजय बहादुर गोल्ड कप फुटबाल प्रतियोगिता मानों यहाँ का विश्व कप फुटबाल था । यही एकमात्र खेल था जिसके लिए पूरा जगदलपुर और आस पास के उड़ीसा के भी गावों के लोग मैच देखने आया करते थे और शहर का सिटी ग्राउंड खचाखच भर जाता था । लेकिन इसके अलावा कोई ऐसा उल्लेखनीय खेल और नहीं था, जो इतना अधिक लोकप्रिय हो । वैसे तो यहाँ वॉलीबाल, कबड्डी, हॉकी, क्रिकेट भी चलन में थे पर अत्यधिक लोकप्रिय फुटबाल ही रहा जिसमें पशिचम बंगाल, पंजाब , केरल, आंध ,प्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार , ओडिष्सा, गोवा, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश की नामी टीमें आया करती थीं ।

लगभग 20 वर्ष पहले जगदलपुर शहर में महिलाओं के राष्ट्रिय खेल का आयोजन हुआ जिसमे विभिन्न खेल शामिल थे, खो खो, कबड्डी, फुटबाल, लम्बी कूद, ऊँची कूद, बाल बैडमिंटन, हैंडबाल, वॉलीबाल इत्यादि, इसमें देश के लगभग सभी राज्यों से टीमों ने शिरकत की थी । उसकी वजह से बस्तर में खेल गतिविधियों की हलचल बढ़ गई और इस खेल के बाद नेशनल शालेय खेल प्रतियोगिता का आयोजन हुआ और मुझे लगता है, इस राष्ट्रीय खेल ने बस्तर में खेलों के विकास के लिए तडके का काम किया , क्योंकि इससे बालिक. ाओं में खेल के प्रति जागरूकता बढ़ी और उनमें आत्मविश्वास जागृत हुआ और मैंने व्यक्तिगत रूप से बड़ा फर्क ये महसूस किया कि जगदलपुर में स्थित माता रुक्मणि बालिका आश्रम डिमरापाल में जबरदस्त उत्साह का वातावरण निर्मित हुआ और बालिकाओं को प्रोत्साहित करने ले लिए आश्रम के प्रबंधक पद्मश्री धर्मपाल सैनी जी का अत्यंत महत्वपूर्ण और अविस्मरनीय और अद्भुत योगदान रहा ।

बस्तर संभाग में माता रुक्मणि संस्थान के लगभग 40 आश्रम हैं, जो पद्मश्री धर्मपाल सैनी जी की तपस्या का फल है, उन्होंने बस्तर के गाँव गाँव से बीहड़ वन क्षेत्र से बच्चियों को शिक्षित करने के लिए अपने आश्रम में लाया उनको पढ़ाया लिखाया उनकी इसी समाज सेवा और विशिष्ट कार्य के लिए उनको पद्मश्री से नवाजा गया । समाज सेवा और बालिका शिक्षा के क्षेत्र में वे अग्रणी तो थे ही परन्तु खेल के लिए उनके योगदान को नकार नहीं सकते । वे स्वयं ही सुबह से बालिकाओं को लेकर मैदान में पहुँच जाते हैं और उनका उत्साहवर्धन करते हैं । उनके सान्निध्य में रहकर कई बच्चे निखर कर आगे आये । बालमति ने तो राज्य स्तरीय मैराथन में पहला स्थान पाया था । बस्तर में खेलों के विकास में सैनी जी को कोई भूल नहीं सकता । आज भी 93 वर्ष की आयु में वे आपको खेल के मैदान में मिल जायेंगे। उनके जज्बे को मेरा नमन है । वे हमारे लिए बस्तर का गौरव हैं एक धरोहर हैं और माता रुक्मिणी आश्रम खेलों में मील का पत्थर । आज स्थिति ये है की आश्रम की बालिकायें राज्य स्तर पर, राष्ट्र स्तर पर और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी परचम लहरा रहीं हैं । कई खेलों में आश्रम की बालिकाओं का अहम् योगदान साबित हो रहा है, चाहे मैराथन हो, तीरंदाजी हो, फुटबाल हो, योग हो ।

यहाँ पर मैं नारायणपुर स्थित रामकृष्ण मिशन का उल्लेख करना भी महत्पूर्ण समझता हूँ । यहाँ के बालकों ने देश की स्कूल स्तर की प्रतिष्ठित फुटबाल प्रतियोगिता संतोष ट्राफी जीतकर बस्तर को गौवान्वित किया और न सिर्फ बस्तर का, राज्य का डंका फुटबाल में बजा दिया । वहां के बच्चों ने भी कई खेलों में राष्ट्रीय स्तर पर बस्तर का नाम ऊँचा किया है, बीजापुर बचेली के बच्चे बैडमिंटन में काफी अच्छा कर रहे हैं । शतरंज के खेल में जगदलपुर के लव्यज्योति ने बालक वर्ग में 2021 में अन्डर 12 में राष्ट्र स्तर पर धमक पैदा की राष्ट्रीय स्तर पर हुई ऑलाइन प्रतियोगिता में उसने प्रथम स्थान प्राप्त कर बस्तर और पूरे छतीसगढ़ का मान बढ़ाया यह बस्तर के लिए एक बड़ी उपलब्धि है । मुझे उसमे भविष्य का ग्रैंडमास्टर नजर आ रहा है ।

बस्तर की पर्वतारोही नैना धाकड़ ने हिमालय की सबसे ऊंची चोटी माउंट एवरेस्ट पर विजय प्राप्त की । नैना धाकड़ की यह उपलब्धि अद्भुत और लाजवाब है । वह बस्तर के खिलाडियों की प्रेरणा है नैना छत्तीसगढ़ की प्रथम महिला है जिसने माउंट एवरेस्ट पर तिरंगा लहराया है । बस्तर में कई खेलों में अनेक संभावनाएं हैं क्योंकि यहाँ प्रतिभाओं की कमी नहीं है ,फुटबाल जुडो कराटे, किक बॉक्सिंग, क्रिकेट, एथलेटिक्स, बैडमिंटन , नौका दौड़ में खेल प्रतिभाएं सामने आ रही हैं तथा राष्ट्रीय स्तर पर दस्तक दे रही हैं । ग्रामीण खेलों का भी माहौल जिला प्रशासन और पुलिस प्रशासन के सहयोग से बहुत बढिया बन रहा है। खो खो, कबड्डी, योग, मलखम्ब इत्यादि में बस्तर के बच्चे आगे निकल रहे हैं । मार्च 2022 हरियाणा के पंचकुला में सम्पन्न हुई राष्ट्रिय सिविल सर्विसेस की बैडमिंटन प्रतियोगिता में भी बस्तर के मनोज लकड़ा, नेगी , जगत साव, बी एस ध्रुव , एस। एस। शेंडे, डॉ। बी प्रकाश मूर्ती , राबर्टसन, नितेश महंत, हलीम और नेताम ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराकर और पदक जीतकर बस्तर में खेलों के विकास की ओर बढ़ते कदमों की आहट से ध्यान आकर्षित किया है ।

कोचिंग व्यवथा के कमी की वजह से खिलाडियों को उचित मार्गदर्शन नहीं मिल पाता लेकिन अब बस्तर में एनआई एस कोच भी उभरने लगे हैं जो बस्तर के आने वाले भविष्य की ओर इंगित करते हैं । साथ ही कुछ अच्छे पुराने खिलाड़ी भी बालक और बालिकाओं के लिए पसीना बहा रहे हैं जो सराहनीय है । क्रिकेट में आनंद मोहन मिश्रा, राजकुमार महतो, जोगेन्द्र ठाकुर, अनुराग शुक्ला, करनदीप सग्गू एथलेटिक्स में अजय न संजय मूर्ती, हाकी में पिल्ले, जुडो में मोईन अली, मकसूदा हुसैन, ठाकुर मास्टर्स एथलेटिक्स में नबी मोहम्मद, अशोक राव, बास्केटबाल में संगीता तिवारी, फुटबाल में रूपक मुखर्जी, ,गौतम कुंडू, विश्वजीत भट्टाचार्य इत्यादि। रूपक मुखर्जी तो फुटबाल के राष्ट्रीय रेफरी भी बने, शतरंज में राजेश जेना और रविन्द्रनाथ कुलगुरु बस्तर से पहले आर्बिटर बने ।

Scanned by CamScanner